आदरणीय पंतप्रधान माननीय श्री.नरेंद्र दामोदरदास मोदीजी,

प्रधानमंत्री कार्यालय, भारत सरकार,

नई दिल्ली,

पत्रलेखक -- गणितप्रेमी विलास रामकृष्ण पोतनीस, पुणे, महाराष्ट्र.
भ्रमणध्वनी - 9960282943. email - potnisvilas@gmail.com

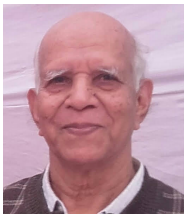

<u>विषय - विश्वमे केवल गणित विषय ही सबसे महान ईश्वर है । श्रीगणितेश्वर के भव्य मंदिर की मेरी संकल्पना जो प्रत्यक्ष रूपमे अपने भारतवर्षमे प्रकट हो और उसे आपकी मदद और आशीर्वाद मिले यही मेरी प्रार्थना ।</u>

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी आपको सादर प्रणाम ।

रविवार दि.24 एप्रिल 2022 को आकाशवाणीसे प्रसारित हुआ आपका "मनकी बात" यह कार्यक्रम सुनकर मेरा मन बहुत प्रसन्न और प्रभावित हुआ । बडे अभिमान और गर्वसे भारतीय वैदिक गणित और गणितज्ञोंका आपने उल्लेख किया। भास्कराचार्य, आर्यभट, ब्रम्हगुप्त, श्रीनिवास रामानुजन ऐसे महान दिग्गजोंका नाम सुनकर हम भारतीय गणितीज्ञानमे कितने प्रगत थे इसकी कल्पना पूरे विश्वमे कोई नही कर सकता । आपका कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा और मेरे मनमे भारतीय गणित का प्राचीन इतिहास जागृत हुआ । भारतीय हिंदुसंस्कृतीमे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ऐसे चार वेद है। ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गांधर्ववेद, अथर्ववेदका स्थापत्यवेद ऐसे चार उपवेद भी है। चार उपवेद अलग अलग ज्ञान देते है । उसमे स्थापत्यवेद वैदिक गणित का पूरा ज्ञान प्रस्तुत करता है । वेदोंका लेखन किसने और कब किया इसका भारतवर्षमे किसीको पता नही लेकिन "व्यासोच्छिष्टं जगत् सर्वम् " यह तो सब मानते है । मतलब यह हजारो, लाखो साल पुराना इतिहास है ।

उस जमानेमे एकम, दशम, शतम, सहस्त्र, दशसहस्त्र, लक्ष, दशलक्ष, अब्ज, दशअब्ज, ... ऐसे करते करते अनंत, दशअनंत तककी ९७ अंकोंकी संख्या (मतलब infinity×10)

जरूरत पडनेपर गणितमे इस्तमाल करते थे । केसे सुलझाते होंगे इतने बडे बडे गणित उस जमानेमे भारतीय गणितज्ञ? (बिना कॅल्क्युलेटर)

अपने ब्रम्हदेवके आयुष्यका केवल एक दिन भी कितना बडा होता है इसकी हम कल्पना भी नही कर सकते। देखिए .... (1) कलियुग = ४,३२,००० साल (२) द्वापारयुग = ८,६४,००० साल (३) त्रेतायुग = १२,९६,००० साल और सबसे पुराना (४)सत्ययुग = १७,२८,००० साल । ऐसे चार युग मिलकर जो पूरा काल होता है उसे एक चतुर्युगी कहते है और एक चतुर्युगी का काल = ४३,२०,०००. साल (Years) होता है । ऐसे ५६ चतुर्युगी = १ मन्वंतर , १४ मन्वंतर = १ कल्प होता है । और इस तरह ५६ चतुर्युगी × १४ मन्वंतर × १२ कल्प = ४० अब्ज,६४ करोड,२५ लाख,६०,००० साल यह पूरा काल ब्रम्हदेवके आयुष्यका एक दिन हुआ । होता नही है नं विश्वास !!! लेकिन इतना महान गणित अपने भारतीय संस्कृतीसे मिला है यह त्रिवार सत्य हे ।

और एक उदाहरण - गोपीभाग्य मधुव्रात, श्रृंगीशोदधि संधिग। ------- श्रीकृष्ण स्तुती

खल जीवित खाताव, गलहाल रसंधर ।। ------ शिव स्तुती

"पाय" की किंमत - पहली पंक्ती - 3.141592653589793 दूसरी पंक्ती - 2384626433832792.

यह श्लोक याद रखकर हम वर्तुलगणित के लिए उपयोगी "पाय" की किंमत आसानीसे याद रख सकते है और वो भी दशांश चिन्ह के बाद ३१ अंकोंतक। यह किमत हजारो लाखो साल पहले भारतीय गणितज्ञ इस्तेमाल करते थे । हम भारतीय पूरे विश्वमे गणित विषयमे सबसे अग्रसर थे इसमे कोई शक नही । १ से ९ तक के क्रमवार अंकोंकी किमत क्रमवार अक्षरोंको देकर यह तरकीब इस्तेमाल करना यह कल्पना मारतीय गणितज्ञोंकीही कमाल है । कादिनव , टादिनव, पादिपंचक और क्ष शुन्य. इस प्रकार अक्षरोंको अंकोंकी किमत देकर गणिती सूत्रोंको याद रखते थे । अपने प्राचीन गणित और गणितज्ञोंके बारेमे हम जितना लिखे उतना कम ही है ।

माननीय प्रधानमंत्री श्री.नरेंद्र मोदीजी , मैने आपके " मन की वात " सुनी । आपने वेदिक गणित और भारतीय गणितज्ञोंका बहुत प्रेम और अभिमानसे उल्लेख किया । मै गणितज्ञ तो नही परंतु सौप्रतिशत गणितप्रेमी तो जरूर हूं । इसलिए मै भी आपके सोच-विचारकेलिए आपके सन्मुख मेरे "मन की बात" प्रस्तुत करने जा रहा हूं । मनःपूर्वक धन्यवाद।

मै मेरे मनसे गणित विषयकोही सारे विश्वका भगवान मानता हूं । पुरे विश्वको मार्गदर्शन करनेवाला ईश्वर केवल गणितही है । श्रीगणितेश्वर सर्वव्यापी है । जहां गणित नही है ऐसी एकभी जगह पूरे विश्वमे नही है । जो जो विश्वमे प्रवेश करता है वह अपने जन्मके साथ साथ मरते दमतक गणित विषयसेही

जुड़ा रहता है या कह सकते है की उसे जुड़ा रहना पड़ता है । हर एक क्षणमे सास लेना पड़ता है, कितना पानी पीना है, कितना खाना खाना है, कितना काम करना हे, कितना दाम कमाना है, कितना आराम करना है, कब सोना है और फिरसे कब जाग जाना है। यह सब केवल गणित ही है । जिसकी निंद खुली नही तो उसका गणित समाप्त !! मतलब गणित ईश्वर के आशीर्वादसेही पूरे विश्वका जीवन चलता रहता है ।

हम लोग जिस परमेश्वरको मानते है उसका प्रत्यक्ष रूप ना हमने कभी देखा है और ना किसीको कभी दिखा सकते है। वह केवल एक कल्पनाही होती है । **लेकिन गणितही एकमात्र ऐसा ईश्वर हे की उसका विश्वके कणकणमे वास है** । गणित ईश्वर सबके लिए समान है। हिंदु, मुस्लिम, सिख, इसाई, बौद्ध, जैन या और कोई भी धर्म का इन्सान हो ,चाहे मर्द हो या औरत, सबका भगवान एकसमान है और वह है गणित। सजीवोंको जीनेके लिए, चाहे कोई जानवर हो, या पेड-पौधे हो गणित करनाही पडता है। निर्जीवोंका आकार, वजन गणितही है । उसकी कलाकृती बनाने के लिए कला के साथ गणित भी जरूरी होता है क्योंकि सौंदर्यमे गणित है और गणितमे भी सौंदर्य है । **गणित विषय महान हे बस सिर्फ सिखाने समझानेका तरीका आसान चाहिए ।**

99,99,99,99,99,999 × 76,28,74,89,77,659 = 7,62,87,48,97,76,58,23,71,25,10,22,341. इतना बडा या इससे भी बडा गुणाकार वेदिक गणित सुत्रकी मददसे कुछही क्षणोमे मनहीमनमे हो सकता है।

अपना प्राचीन अखंड भारत देश ज्ञान और धनसंपत्तीकी सुवर्ण भूमी थी । चीन, जर्मनी, इंग्लैंड, पोर्तुगाल जैसे अन्य युरोपीय देश और अफगानिस्तान, अरबस्तान, बलूचिस्तान जैसे मुस्लिम देश ज्ञान,धनसंपत्ती प्राप्ती के लिए बार बार आते जाते रहे । मुघलोंने तो महंमद घोरी से लेकर औरंगजेब तक भारतदेशपर हत्यारोंकेसाथ आक्रमण करके और यहाँ पे ही वास्तव्य करके धनसंपत्ती और प्रदेशको भी लुटते रहे । उसमे भारतीय संस्कृतीका प्रचंड नुकसान हुआ । उसी समय व्यापार-व्यवसाय के लिए अंग्रेज भी आते रहते थे और उन्होने तो पुरे भारतपर कब्जा किया और करीबन एकसौपचास साल राज्य भी किया । और उनके संस्कारोंनेभी हमपर राज किया । आज भी जिनको अंग्रेजी नही आती उसे अनपढ कहते है ।

माननीय पंतप्रधानजी, अब मै अपने मनकी बात आप सबके सामने प्रस्तुत करने जा रहा हूँ जो इस पत्रलेखनका प्रमुख उद्देश है । **यह पूरे विश्वमे केवल गणित विषय का ही कणकण मे वास है, तो क्युं न हम उसे अपना भगवान समझकर उस ईश्वर का एक महान मंदिर अपनी भारतभूमीपर बनाए !!! वह मंदिर पूरे विश्वमे ख्याती प्राप्त करेगा और सकल विश्वको मार्गदर्शन करेगा ऐसा होना**

चाहिए। वह मंदिरमे " शुन्य " की मूर्ती ईश्वर समझकर स्थापित होगी । क्योंकि शुन्य की खोज भारतीय गणितज्ञो ने पूरे विश्वको समर्पित की है । मंदिरआवार मे प्रवेश होतेही वातावरण प्रसन्न और गणितमय होना चाहिए। वहाँ आर्यभट-1-2, भास्कराचार्य 1-2 , ब्रम्हगुप्त, वराहमिहीर, भारतीकृष्ण शंकराचार्य, श्रीनिवास रामानुजन जैसे अनेक गणित तज्ञोंके मूर्तियों के साथ बाकी जानकारी भी मिलनी चाहिए। वेदिक गणितकी जानकारी मिले ताकी गणित विषयके आसानीकी सबको कल्पना आजाए। श्रीलंका महासेतू, श्रीकृष्णकी द्वारका, बारह ज्योतिर्लिंग जैसे अनेक महत्वपूर्ण मंदिरों जानकारी मिले क्युंकी उसमे स्थापत्यवेदके गणितका उपयोग हुआ होगा । बस ,श्रीगणितेश्वर मंदिर पूज्य और आकर्षक हो ताकी सबको गणित ईश्वरका आशीर्वाद मिले ।

गणित मंदिर अच्छे से अच्छा और किर्तीमान बनने लिए अच्छी योजना, जादा मेहनत, पैसे हिसाब का गणित यह सब अवश्य करना पडेगा इसमे कोई भी शक नही लेकीन अपना भारतवर्ष मंदिरोंकी वजह ऐसी पूरे विश्वका आदर्श है इसमेभी कोईशक नही यह त्रिवार सत्य है । मैने एक गणित मंदिरकी छोटीसी प्रतिकृती बनानेकी कोशिश की है उसका छायाचित्र यहां भेज रहा हूं। आपकी शुभकामनाए मेरी गणित मंदिर संकल्पना अवश्य पूरी करेगी यह मुझे शत-प्रतिशत विश्वास है । मनःपूर्वक धन्यवाद।

ॐ गणितमदः गणितमिदं गणितात् गणित मुदच्यते ।

गणितस्य गणितमादाय गणितमेवाव शिष्यते ।। ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ।।

भावार्थ -- विश्वमे गणितही एकमेव ऐसा विषय है जिसको कोईभी सीमा या मर्यादा नही । कितना भी गणित करो , गणित कभी कम होता नही, सदैव बढताही रहता है । गणित विषय एक पूर्णत्व है ।

भारतवर्षमे विश्वविख्यात गणित मंदिर हो और दिगन्त किर्तीमान हो यही मेरी दिल से मनोकामना है ।

(आपकी जानकारी के लिए एक वर्तमानपत्रमे मेरे गणितमंदिर की कल्पना के बारेमे जानकारी आई है उसकी प्रत तथा मेरे मन की कल्पना अनुसार बनायीं हुई गणित मंदिर की संकल्पना की तस्वीर साथ यहा भेज रहा हूं । मनोमन धन्यवाद)

माननीय पंतप्रधान श्री.नरेंद्र मोदीजी - सादर प्रणाम।

पुणे, महाराष्ट्र, भारतवासी - गणितप्रेमी विलास रामकृष्ण पोतनीस। 9960282943.

==========++++×××××÷÷÷÷÷÷==========